वायरल सच

बीपीएस महिला विश्वविद्यालय मे स्थित माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान ने कैंसर को दी मात

गोहाना, वायरल सच (अनिल जिंदल) : भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां स्थित माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान ने आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान के अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा कैंसर जैसी गंभीर और जानलेवा बीमारी से पीड़ित एक महिला के सफल उपचार ने न केवल आयुर्वेद की शक्ति को प्रमाणित किया है, बल्कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ इसके समन्वय की नई संभावनाओं को भी उजागर किया है। जिला हिसार के गांव राजथल निवासी राजपति देवी ने बताया कि वर्ष 2007 में कैंसर की अंतिम अवस्था में उन्हें उपचार हेतु अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ले जाया गया, जहां से चिकित्सकों ने स्थिति गंभीर बताते हुए घर भेज दिया था। ऐसे कठिन समय में जब परिवार की सारी उम्मीदें टूट चुकी थीं, तब अंतिम आशा के रूप में आयुर्वेद चिकित्सा को अपनाया गया। उन्होंने बताया कि माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान में उपचार के बाद उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार हुआ और आज वे एक सामान्य जीवन जी रही हैं।

राजपति देवी के पुत्र अनिल ने भावुक होते हुए बताया कि जब सभी रास्ते बंद नजर आ रहे थे, तब किसी परिचित ने उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मां के सफल इलाज के बाद परिवार का आयुर्वेद पर अटूट विश्वास बन गया है और अब किसी भी बीमारी के उपचार के लिए वे हिसार से खानपुर कलां स्थित आयुर्वेद संस्थान में ही आते हैं। इस अवसर पर आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल ने बताया कि राजपति देवी के उपचार से उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सा पर आधारित शोध के लिए एक नया और महत्वपूर्ण विषय मिला है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल रोगों का उपचार नहीं करता, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के माध्यम से संपूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करता है। उन्होंने विश्वास जताया कि गंभीर से गंभीर रोगों के उपचार की संभावनाएं आयुर्वेद में मौजूद हैं, बशर्ते सही पद्धति और निरंतर शोध किया जाए। संस्थान के प्राचार्य डॉ. ए. पी. नायक ने कहा कि आयुर्वेद में अनुसंधान की असीम संभावनाएं हैं। ऐसे उदाहरण न केवल शोधकताओं को प्रेरित करते हैं, बल्कि समाज में आयुर्वेद के प्रति विश्वास को भी मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान भविष्य में आयुर्वेदिक शोध को और अधिक वैज्ञानिक आधार देने की दिशा में निरंतर कार्य करेगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुदेश ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शोध के साथ जोड़कर समाज के हित में उपयोग करना है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद भारत की अमूल्य धरोहर है और इस प्रकार के सफल उपचार यह सिद्ध करते हैं कि सही शोध, समर्पण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आयुर्वेद वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कुलपति ने संस्थान के चिकित्सकों, शोधकताओं और छात्राओं को इस उल्लेखनीय कार्य के लिए बधाई देते हुए भविष्य में और अधिक नवाचार की अपेक्षा व्यक्त की।

आयुर्वेद ने कैंसर को दी मात

जन जागरण संदेश

खानपुर कलां / गोहाना, (अनिल जिंदल) 28 जनवरी। भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां स्थित माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान ने आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान के अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा कैंसर जैसी गंभीर और जानलेवा बीमारी से पीड़ित एक महिला के सफल उपचार ने न केवल आयुर्वेद की शक्ति को प्रमाणित किया है, बल्कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ इसके समन्वय की नई संभावनाओं को भी उजागर किया है।

जिला हिसार के गांव राजथल निवासी राजपति देवी ने बताया कि वर्ष 2007 में कैंसर की अंतिम अवस्था में उन्हें उपचार हेतु अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ले जाया गया, जहां से चिकित्सकों ने स्थिति गंभीर बताते हुए घर भेज दिया था। ऐसे कठिन समय में जब परिवार की सारी उम्मीदें टूट चुकी थीं, तब अंतिम आशा के रूप में आयुर्वेद चिकित्सा को अपनाया गया। उन्होंने बताया कि माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान में उपचार के बाद उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार हुआ और आज वे एक सामान्य जीवन जी रही हैं। राजपति देवी के पुत्र अनिल ने भावुक होते हुए बताया कि जब सभी रास्ते बंद नजर आ रहे थे, तब किसी परिचित ने उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मां के सफल इलाज के बाद परिवार का आयुर्वेद पर अटूट विश्वास बन गया है और अब किसी भी बीमारी के उपचार के लिए वे हिसार से खानपुर कलां स्थित आयुर्वेद संस्थान में ही आते हैं। इस अवसर पर आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल ने बताया कि राजपति देवी के उपचार से उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सा पर आधारित शोध के लिए एक नया और महत्वपूर्ण विषय मिला है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल रोगों का उपचार नहीं करता, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के माध्यम से संपूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करता है। उन्होंने विश्वास जताया कि गंभीर से गंभीर रोगों के उपचार की संभावनाएं आयुर्वेद में मौजूद हैं, बशर्ते सही पद्धति और निरंतर शोध किया जाए। संस्थान के प्राचार्य डॉ. ए. पी. नायक ने कहा कि आयुर्वेद में अनुसंधान की असीम संभावनाएं हैं। ऐसे उदाहरण न केवल शोधकर्ताओं को प्रेरित करते हैं, बल्कि समाज में आयुर्वेद के प्रति विश्वास को भी मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान भविष्य में आयुर्वेदिक शोध को और अधिक वैज्ञानिक आधार देने की दिशा में निरंतर कार्य करेगा। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुदेश ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि भगत फूल सिंह महिला विश्वविद्यालय का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शोध के साथ जोड़कर समाज के हित में उपयोग करना है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद भारत की अमूल्य धरोहर है और इस प्रकार के सफल उपचार यह सिद्ध करते हैं कि सही शोध, समर्पण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आयुर्वेद वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कुलपति ने संस्थान के चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और छात्राओं को इस उल्लेखनीय कार्य के लिए बधाई देते हुए भविष्य में और अधिक नवाचार की अपेक्षा व्यक्त की।

बीपीएस महिला विवि के आयुर्वेदिक संस्थान के चिकित्सक ने स्वरस चिकित्सा पद्धति से महिला के कैंसर का किया सफल इलाज

दावा: एम्स से घर भेजी थी कैंसर पीड़िता, आयुर्वेद पद्धति से जी रहीं स्वस्थ जीवन

भास्कर न्यूज | गोहाना

दिल्ली के एम्स से ब्लड कैंसर से पीड़ित महिला को करीब 19 साल पहले दो दिन का आखिरी समय बताकर घर भेज दिया गया था, वह अब आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से स्वस्थ जीवन जी रही हैं। दावा किया जा रहा है कि महिला का खानपुर कलां स्थित बीपीएस महिला विवि के माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेदिक संस्थान के चिकित्सक ने आयुर्वेद की केवल स्वरस चिकित्सा पद्धति से सफल इलाज किया है।

हिसार के राजथल गांव निवासी राजपति देवी को 46 की उम्र में वर्ष-2004 में ब्लड कैंसर घोषित किया गया था। उन्हें एक्यूट माइलॉयड ल्यूकेमिया (एएमएल) और क्रोनिक माइलॉयड ल्यूकेमिया (सीएमएल) बताया गया था। इस पर परिजनों ने उनका इलाज दिल्ली के एम्स में शुरू कराया। दावा है कि वर्ष-2007 में चिकित्सकों ने परिजनों को जवाब दे दिया था। चिकित्सकों ने राजपति देवी के आखिरी दो दिन बताकर परिजनों को सेवा करने की सलाह दी थी। इस पर परिजन आखिरी उम्मीद लेकर एक जानकार के बताए अनुसार भिवानी में पतंजलि स्टोर पर नियुक्त आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल के पास पहुंचे। वे उस समय राजपति देवी को एंबुलेंस में लेकर गए। वहां डॉ. अनिल ने उनका स्वरस पद्धति से इलाज शुरू किया। डॉ. अनिल कुमार ने दावा किया है कि स्वरस चिकित्सा पद्धति से राजपति देवी को 15 ही दिन में आराम दिखने लगा। इसके बाद उनका लगातार इलाज चलता रहा और अब वे 75 की उम्र में पूरी तरह से स्वस्थ हैं।

गोहाना. मरीज के साथ आयुर्वेद संस्थान के प्राचार्य व अन्य।

एएमएल व सीएमएल डाइग्नोज होने के बाद 1 हजार मरीजों में से मात्र एक ही मरीज के रिकवरी करने के चांस होते हैं। इसी के चलते 2007 में राजपति देवी का एम्स के चिकित्सकों ने आखिरी समय बता दिया था। परिजन राजपति देवी को उनके पास लेकर आए तो उन्होंने स्वरस चिकित्सा पद्धति से उनका इलाज शुरू किया। इससे उनका इम्युनिटी बूस्टर बेहतर हुआ। उन्हें कीमो, सेक समेत अन्य चिकित्सा पद्धतियों की जरूरत नहीं पड़ी। अब वह पूरी तरह से स्वस्थ हैं। - डॉ. अनिल, सहायक प्राध्यापक, पंचकर्मा विभाग, आयुर्वेद संस्थान, खानपुर कलां

राजपति में रह गया था 2 ग्राम खून

डॉ. अनिल कुमार ने दावा किया है कि जिस समय राजपति देवी को उसके परिजन उनके पास लेकर आए, उस समय उनमें केवल दो ग्राम खून था। एम्स में उनके इलाज के दौरान खून चढ़ाया जाना था, लेकिन उन्हें यह प्रक्रिया शूट नहीं की। इस कारण चिकित्सकों ने परिजनों को जवाब दे दिया था। इसके बाद उन्होंने राजपति देवी को व्हीट ग्रास, गिलोय व आंवला स्वरस देना शुरू किया। इससे 15 ही दिन में उनकी इम्युनिटी में सुधार होने लगा। इसके बाद उनकी औषधीय पद्धति अपनाई। इसमें स्वर्ण, हीरक व ताम्र भस्म देना शुरू किया। उनका तेल युक्त खाना बंद करके व्हीट ग्रास के अलावा सूप, नारियल पानी समेत अन्य तरह पदार्थ लेने की सलाह दी गई। जंगल में घूमने वाली बकरी के दूध का सेवन करना बताया गया। वहीं पंचकर्मा के द्वारा शोधन किया। उन्होंने इस डाइट को पूरी तरह निभाया और लगातार अपना चेकअप कराती हैं।

CAMPUS NOTES

WOMEN'S VARSITY SIGNS PACT

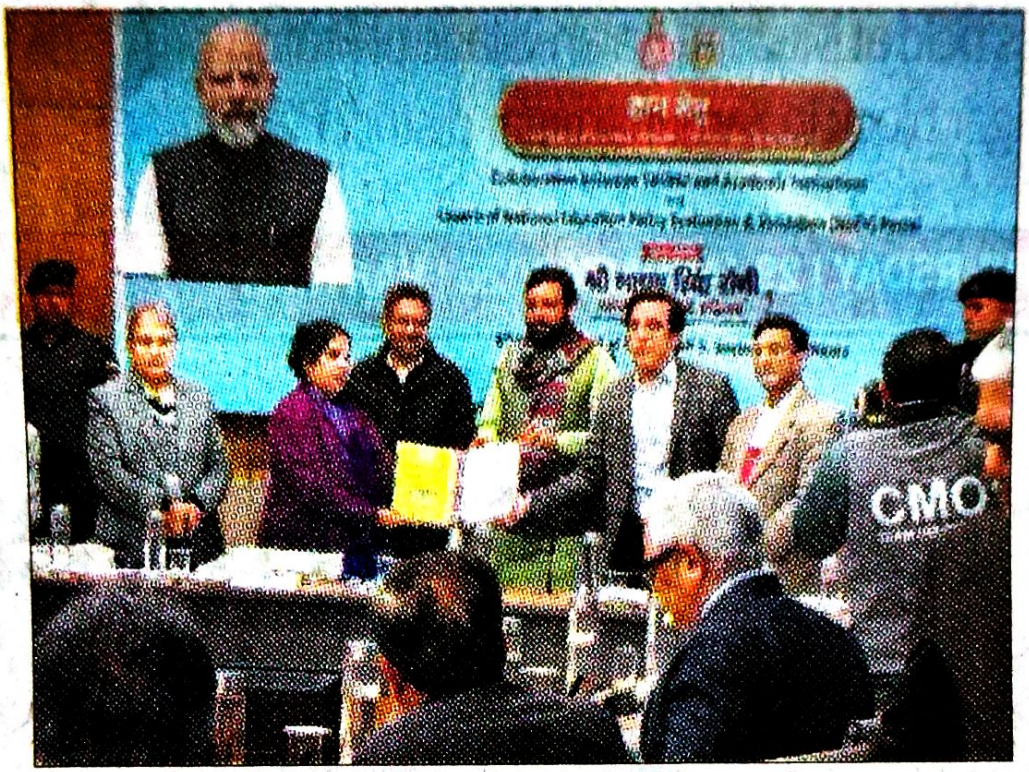

Khanpur Kalan: At a state-level programme held in Panchkula under the chairmanship of Haryana Chief Minister Nayab Singh Saini, a Memorandum of Understanding (MoU) was signed between the Swarna Jayanti Haryana Institute for Fiscal Management and Bhagat Phool Singh Mahila Vishwavidyalaya, Khanpur Kalan, under the ;Gyan Setu' initiative. On the occasion, the Chief Minister also inaugurated the Neev Portal. Vice-Chancellor Prof Sudesh stated that MoUs were exchanged with 28 reputed educational institutions, including the Women's University. The objective of the MoU is to link academic knowledge with real administrative and social challenges, ensuring that research contributes to governance and societal problem-solving, she said. The CM stated that these collaborations would promote impact evaluation of government schemes, capacity-building programmes, internships and field engagement for students, thereby strengthening policy formulation and providing practical administrative exposure to the youth. The Neev Portal aims to ensure real-time, fair and continuous assessment of NEP-2020 implementation through data-driven performance indicators and predictive analysis.

ANTI-TOBACCO DRIVE AT SONEPAT VARSITY

Khanpur Kalan: Registrar of Bhagat Phool Singh Women's University, Prof Shivalik Yadav, emphasised that tobacco not only harms consumers' health but also hinders social and national progress. Addressing an anti-drug awareness programme as the chief guest, he said healthy youth form the foundation of a strong nation and called upon employees to stay away from tobacco and motivate others to quit. The programme was organised under the chairpersonship of Prof Manju Panwar, Nodal Officer, Narco Coordination Centre. The chief speaker, Dr AP Nayak, Principal, Madhu Singh Memorial Ayurveda Institute, highlighted the severe health hazards of tobacco consumption and stressed that maintaining a tobacco-free campus is a collective responsibility. Prof Yadav reiterated the university administration's firm commitment to enforcing tobacco-free campus norms and expressed confidence that, with collective efforts, the university would emerge as a model tobacco-free campus. On the occasion, he also administered a pledge to employees in this regard.

पंजाब केसरी
THU,29 JANUARY 2026
EDITION: SONIPAT KESARI, PAGE NO. 3

हिसार के राजथल गांव की राजपति को महिला विश्वविद्यालय ने संस्थान ने प्रदान किया नया जीवन

कैंसर की लास्ट स्टेज थी, एम्स ने 19 साल पहले दे दिया था जवाब, आयुर्वेद ने कर दिया एकदम भला-चंगा

गोहाना, 28 जनवरी (अरोड़ा): बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय स्थित माडू सिंह मैमोरियल आयुर्वेद संस्थान ने आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान के अनुभवी आयुर्वैदिक चिकित्सकों द्वारा कैंसर जैसी गंभीर और जानलेवा बीमारी से पीड़ित एक महिला के सफल उपचार ने न केवल आयुर्वेद की शक्ति को प्रमाणित किया है, बल्कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ इसके समन्वय की नई संभावनाओं को भी उजागर किया है।

प्रिंसीपल डॉ. ए.पी. नायक, डॉ. अनिल और डॉ. नरेश भार्गव के साथ राजपति और उसका बेटा। (अरोड़ा)

जिला हिसार के गांव राजथल निवासी राजपति ने बताया कि वर्ष 2007 में कैंसर की अंतिम अवस्था में उन्हें उपचार के लिए नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ले जाया गया, जहां से चिकित्सकों ने स्थिति गंभीर बताते हुए घर भेज दिया था। ऐसे कठिन समय में जब परिवार की सारी उम्मीदें टूट चुकी थीं, तब अंतिम आशा के रूप में आयुर्वेद चिकित्सा को अपनाया गया।

उन्होंने बताया कि माडू सिंह मैमोरियल आयुर्वेद संस्थान में उपचार के बाद उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार हुआ और आज वह एक सामान्य जीवन जी रही हैं। उन्हें इस संस्थान ने नया जीवन प्रदान किया है।

राजपति के पुत्र अनिल ने भावुक होते हुए बताया कि जब सभी रास्ते बंद नजर आ रहे थे, तब किसी परिचित ने उन्हें आयुर्वैदिक चिकित्सक डॉ. अनिल कुमार के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मां के सफल इलाज के बाद परिवार का आयुर्वेद पर अटूट विश्वास बन गया है।

आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि राजपति के उपचार से उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सा पर आधारित शोध के लिए एक नया और महत्वपूर्ण विषय मिला है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल रोगों का उपचार नहीं करता, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के माध्यम से संपूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करता है।

प्रिंसीपल डॉ. ए.पी. नायक ने कहा कि आयुर्वेद में अनुसंधान की असीम संभावनाएं हैं। ऐसे उदाहरण न केवल शोधकर्त्ताओं को प्रेरित करते हैं, बल्कि समाज में आयुर्वेद के प्रति विश्वास को भी मजबूत करते हैं।

विश्वविद्यालय की वी.सी. प्रो. सुदेश ने इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शोध के साथ जोड़कर समाज के हित में उपयोग करना है। आयुर्वेद भारत की अमूल्य धरोहर है। वी.सी. ने संस्थान के चिकित्सकों, शोधकर्त्ताओं और छात्राओं को इस उल्लेखनीय कार्य के लिए बधाई दी।

सु-डोकू-8140

			5		6		7	
		8		3				9
	9				4	5		
9		6			2			
8				7				1
			9			4		3
		7	4				6	
3				8		2		
	6		7		1			

आड़े, खड़े व 3×3 के वर्ग में 1 से 9 तक के अंक इस प्रकार भरें कि किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो। पहेली के एक से अधिक हल हो सकते हैं।

सु-डोकू-8139 का उत्तर

4	7	5	1	8	2	3	6	9
2	1	6	3	7	9	4	8	5
3	8	9	6	4	5	7	1	2
1	5	7	2	3	6	9	4	8
6	4	3	8	9	1	2	5	7
8	9	2	4	5	7	6	3	1
5	6	4	7	2	8	1	9	3
7	3	8	9	1	4	5	2	6
9	2	1	5	6	3	8	7	4

कैंसर की लास्ट स्टेज थी, एम्स ने 19 साल पहले दे दिया था जवाब, आयुर्वेद ने कर दिया एकदम भला-चंगा

हिसार के राजथल गांव की राजपति को महिला विश्वविद्यालय ने संस्थान ने प्रदान किया नया जीवन

गोहाना मुद्रिका, 28 जनवरी : बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय स्थित माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान ने आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज की है। संस्थान के अनुभवी आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा कैंसर जैसी गंभीर और जानलेवा बीमारी से पीड़ित एक महिला के सफल उपचार ने न केवल आयुर्वेद की शक्ति को प्रमाणित किया है, बल्कि आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के साथ इसके समन्वय की नई संभावनाओं को भी उजागर किया है।

जिला हिसार के गांव राजथल निवासी राजपति ने बताया कि वर्ष 2007 में कैंसर की अंतिम अवस्था में उन्हें उपचार के लिए नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ले जाया गया, जहां से चिकित्सकों ने स्थिति गंभीर बताते हुए घर भेज दिया था। ऐसे कठिन समय में जब परिवार की सारी उम्मीदें टूट चुकी थीं, तब अंतिम आशा के रूप में आयुर्वेद चिकित्सा को अपनाया गया। उन्होंने बताया कि माडू सिंह मेमोरियल आयुर्वेद संस्थान में उपचार के बाद उनके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार हुआ और आज वह एक सामान्य जीवन जी रही हैं। उन्हें इस संस्थान ने नया जीवन प्रदान किया है।

राजपति के पुत्र अनिल ने भावुक होते हुए बताया कि

जब सभी रास्ते बंद नजर आ रहे थे, तब किसी परिचित ने उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल कुमार के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मां के सफल इलाज के बाद परिवार का आयुर्वेद पर अटूट विश्वास बन गया है और अब किसी भी बीमारी के उपचार के लिए वे हिसार से खानपुर कलां स्थित आयुर्वेद संस्थान में ही आते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि राजपति के उपचार से उन्हें आयुर्वेदिक चिकित्सा पर आधारित शोध के लिए एक नया और महत्वपूर्ण विषय मिला है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल रोगों का उपचार नहीं करता, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन के माध्यम से संपूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करता है। उन्होंने विश्वास जताया कि गंभीर से गंभीर रोगों के उपचार की संभावनाएं आयुर्वेद में मौजूद हैं, बशर्ते सही पद्धति और निरंतर शोध किया जाए।

प्रिंसिपल डॉ. ए. पी. नायक ने कहा कि आयुर्वेद में अनुसंधान की असीम संभावनाएं हैं। ऐसे उदाहरण न केवल शोधकर्ताओं को प्रेरित करते हैं, बल्कि समाज में आयुर्वेद के प्रति विश्वास को भी मजबूत करते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान भविष्य में आयुर्वेदिक शोध को और अधिक वैज्ञानिक आधार देने की दिशा में निरंतर कार्य करेगा।

विश्वविद्यालय की वी.सी. प्रो. सुदेश ने इस उपलब्धि पर ख़ुशी जाहिर करते हुए कहा कि बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली को आधुनिक शोध के साथ जोड़कर समाज के हित में उपयोग करना है।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद भारत की अमूल्य धरोहर है और इस प्रकार के सफल उपचार यह सिद्ध करते हैं कि सही शोध, समर्पण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से आयुर्वेद वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

वी.सी. ने संस्थान के चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और छात्राओं को इस उल्लेखनीय कार्य के लिए बधाई देते हुए भविष्य में और अधिक नवाचार की अपेक्षा व्यक्त की।